कविताएँ

हिन्दी दिवस

सुविधा श्रीवास्तवा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल गुरुग्राम सैक्टर 43, कक्षा 11 ए

हिन्दी है हमारी राष्ट्रभाषा,
हिन्दी है हमें बड़ी प्यारी,
हिन्दी की सुरीली वाणी,
हमें लगे हर पल प्यारी।

जन-जन की भाषा है हिन्दी,
भारत की आशा है हिन्दी,
जिसने पूरे देश को जोड़ के रखा,
ऐसा मजबूत धागा है हिन्दी।

हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिन्दी,
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी,
जिसके बिना हिन्द थम जाए,
ऐसी जीवन रेखा है हिन्दी।

जिसने काल को जीत लिया,
ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी,
सरल शब्दों में कहा जाए तो,
जीवन की परिभाषा है हिन्दी।

स्वच्छ भारत

गौरी दांतरे, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल ग्वालियर, कक्षा 8

मतवालों की टोली निकली,
साफ चमन बनाने को,
चम-चम करता स्वच्छ दमकता,
अपना वतन बनाने को।

दिल के सच्चे साफ हैं हम,
ये जग माने सदियों से,
चलो मित्रों निकलें अब,
भारत स्वच्छ बनाने को।

हमने देखे कई करीबी,
घोषित दिल के सच्चों को,
ज्ञानी-ध्यानी महज कागजी,
देखा अच्छे-अच्छों को।

बड़ी-बड़ी बातें तो कर ली,
छोटी बात भुला दी है,

किस प्रकार की अलमस्ती है,
ये कैसी आजादी है।

वेद पुराण हमारे कहते हैं,
कैसे तुम वैभव पाओगे,
ढेर गंदगी मचा रखी है,
कैसे स्वच्छता लाओगे।

सोच बदलने, वतन बदलने,
हीरा इसे बनाने को,
चलो देशवासियों निकलें अब,
भारत स्वच्छ बनाने को।

मोदी जी ने कमर कसी है
उनकी तो तैयारी है
गाँधी जी का सपना पूरा करने की
हम बच्चों की बारी है।

मातृभूमि को स्वर्ग बनाने को
मन से ऊँच-नीच का भेद मिटाने को
चलो साथियो निकलें अब
भारत को स्वच्छ बनाने को।

मित्रता

अक्षत सक्सेना, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा सैक्टर 6, कक्षा 8

दोस्ती है अनमोल रतन,
नहीं तोल सकता जिसे कोई धन,
सच्ची दोस्ती जिसके पास है,
उसके पास दौलत की भरमार है।

न ही जीत, न ही कोई हार है,
दोस्त के दिल में तो बस प्यार ही प्यार है,
भटके जब भी दोस्त संसार के मोह जाल में,
खींच लाता है दोस्त उसे अच्छाई के प्रकाश में।

बने चाहे दुश्मन क्यों न जमाना सारा,
सच्चा दोस्त साथ देता है सदा हमारा,
दोस्त के लिए कुर्बान होता है जीवन सारा,
हर मुश्किल में बनता है वो हमारा सहारा।

सच्ची दोस्ती को वक्त परखता है हर बार,
वक्त की परीक्षा से हँसते हुए पास करना,
संसार में सच्चे दोस्त का मिल जाना,
मानो सबसे धनवान बन जाना।

कलम की शक्ति

झलक सक्सेना, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा सैक्टर 6, कक्षा 10 ए

है नहीं क्षमता, कि बोल पाए अल्फाज,
किन्तु बता जाता है, लाखों का राज,
हँसते को रुलाए, रोते को हँसाए,
कलम की ताकत, हरेक भावुक कर जाए।

स्रोता ऐसा, मित्र जैसा,
दु:ख में साथी, सुख में भ्राता,
है समदर्शी, न करे कोई भेदभाव,
एक प्यारे से लेख से, भरे दिल के घाव।

करे उजागर, आम जन के हाल-चाल,
मीरा की चाह, जैसे मिल जाएँ नंदलाल,
सबके दिल का हाल कहे, है यह स्वतंत्र,
कोई राज न इससे छुपता, है ये ऐसा यंत्र।

कवि की कल्पना,
व लेखक के अनुभव बतलाए,
यह है कलम की ताकत,
जो मन के भावों को स्पष्ट कर जाए।

युगपुरुष डॉ॰ अशोक के॰ चौहान

सामन्यू जोशी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल मयूर विहार, कक्षा 10 बी

शिक्षा की ज्योति प्रसार करने का,
अद्वितीय लक्ष्य अपनाया जिसने,
कर्मयोगी बन मेहनत का,
अतुल्य पाठ पढ़ाया जिसने।
हमारे प्रेरणास्रोत युगपुरुष में,
इस छवि को पाया हमने।

राहें आसान नहीं थी,
मंजिलें पास नहीं थीं,
लेकिन जुझारू लहरें बन,
राह की चट्टानों को हटाया जिसने।
हमारे प्रेरणास्रोत युगपुरुष को,
ऐसे नौका पार लगाते पाया हमने।

शिक्षा के दीप संग,
देश प्रेम की गंगा को बहा,
नव भारत के निर्माण का,
विश्व परचम फहराया जिसने।
हमारे प्रेरणास्रोत युगपुरुष को,
देश के सपूत को हर फर्ज निभाते पाया हमने।

समाजसेवी का अर्थ,
सही मायने में बताया जिसने,
मानवीय मूल्य युक्त धर्म को,
अपने लहू का कण-कण बहाया जिसने।
हमारे प्रेरणास्रोत युगपुरुष को,
'भाग' मंत्र की शक्ति बताते पाया हमने।

अमिताशा का आँगन

हिन्दी हमारी आन

मेघा आर्या, अमिताशा साकेत, कक्षा 10

हिन्दी हमारी आन है, हिन्दी हमारी शान है,
हिन्दी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।

हिन्दी हमारी वर्तनी, हिन्दी हमारा आवरण,
हिन्दी हमारी संस्कृति, हिन्दी हमारा आचरण।

हिन्दी हमारी वेदना, हिन्दी हमारा गान है,
हिन्दी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।

हिन्दी हमारी आत्मा है, भावना का साज है,
हिन्दी हमारे देश की, हर तोतली आवाज है।

हिन्दी हमारी अस्मिता, हिन्दी हमारा मान है,
हिन्दी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।

हिन्दी निराला, प्रेमचंद की लेखनी का गीत है,
हिन्दी में बच्चन, पंत, दिनकर का मधुर संगीत हैं।

हिन्दी में तुलसी, सूर, मीरा, जायसी की तान है,
हिन्दी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।

जब तक गगन में चाँद, सूरज की लगी बिन्दी रहे,
तब तक वतन की राजभाषा में अमर हिन्दी रहे।

हिन्दी हमारा शब्द, स्वर व्यंजन हमारी पहचान है,
हिन्दी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।

हिन्दी दिवस

अफरीन, अमिताशा नौएडा, कक्षा 5

एक डोर से सबको बाँधती
वो मेरी प्यारी हिन्दी है,
हर भाषा को सगी बहन मानती,
वो सबकी प्यारी हिन्दी है।

भरी-पूरी हो सभी बोलियाँ,
यही कामना हिन्दी है,
गहरी हो पहचान आपसी,
यही साधना हिन्दी है।

सौत विदेशी रहे न रानी,
यही भावना हिन्दी है,
तत्सम, तद्भव, देश विदेश,
सब रंगों को अपनाती।

जैसे आप बोलना चाहें,
वही मधुर वह मन भाती,
नए अर्थ के रूप धारती,
खाली-पीली बम मारती।

मुंबई की चौपाटी पर,
चौरंगी सी चली नवेली,
प्रीति पियासी हिन्दी है,
बहुत-बहुत तुम हमको लगती।

'भालो-बाषी' हिन्दी है,
हिन्दी मीठी बोली है,
हिन्दी वह हमजोली है,
सागर में मिलती हैं जिसकी अनेक धाराएँ।

हमारे शिक्षक

वन्दिता, अमिताशा मयूर विहार, कक्षा 5

ज्ञान मार्ग पर गुरु चलाते
अच्छी बातें हमें सिखाते
जीवन में हम हार न मानें,
गुरुवर हमको यह सिखलाते।

सिखलाते सच्ची मानवता,
क्रोध न मन में, हो शीतलता,
सहनशीलता हम अपनाएँ
दूर भगाते गुरु दानवता।

ज्ञान का दीपक गुरु जलाते,
अँधियारा अज्ञान मिटाते,
विद्यारूपी धन देकर गुरु,
प्रगति मार्ग पर हमें बढ़ाते।

जीवन में कुछ पाना है तो
गुरुवर का सम्मान करो,
शीश झुकाकर श्रद्धा से तुम,
बच्चों उन्हें प्रणाम करो।

मेरा देश मेरी जान

पूजा, अमिताशा गुड़गाँव सैक्टर 43, कक्षा 8

मेरा देश मेरी जान, मैं तुझपर कुर्बान,
खेले हैं तेरी गोदी में, कई वीर महान।

देवनागरी कलम है तेरी, और हिन्दी तेरी स्याही,
राह पर तेरे चलना चाहे, हर मुझ जैसा राही।

अखण्ड ज्योति से वेद-पुराण, गंगा जैसी नदियाँ,
ढूँढ़ते ऐसे देश को, बीत जाती हैं सदियाँ।

जन्मे क्रांतिकारी माँ, तेरी ममतामयी पुकार से,
डोल गया अँग्रेजी सिंहासन, जिनकी एक हुंकार से।

भगत सिंह-सी संतान तेरी, कोई गाँधी-सा महान,
देख भारत की ताकत को, तब विश्व हुआ हैरान।

आधुनिकता की छाँव में, अपना अस्तित्व भुलाया है,
भारत माँ का मूल्य भूल, अँग्रेजी का अँगना सजाया है।

मातृभूमि पर एक बार, अपनी नजरें तो टिकाना,
दिल कहेगा अब, हिन्दुस्तान छोड़कर नहीं है जाना।

वसुंधरा पर शान से, तिरंगा बनकर लहराता है,
जब कोई शत्रु चाहे, अखण्डता तोड़ नहीं पाता है।

मेरा देश मेरी जान, मैं तुझपर कुर्बान,
खेले हैं, तेरी गोदी में, कई वीर महान।